आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 6 अंक : 7 मार्च-2019 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

पशुपालन में कौशल विकास हमारी समृद्धि की कुंजी है

प्रिय, पशुपालक एवं किसान भाइयों और बहनो ! राम राम सा।

बेरोजगारी से निपटने और आजीविका के वैकल्पिक उपायों के लिए कौशल विकास के कार्यक्रम और प्रशिक्षण महत्वपूर्ण होते हैं। राजस्थान पूरे देश में कौशल विकास के प्रशिक्षण में सबसे आगे है जो हमारे लिए खुशी की बात है। पशुपालन सेक्टर आजीविका का सबसे सुलभ, सरल और नियमित आमदनी का जरिया है। यह बेरोजगार युवाओं को काम के अवसर प्रदान करने के साथ ही किसान और पशुपालकों की आय को बढ़ाता है। शैक्षणिक योग्यता का होना पर्याप्त नहीं है क्योंकि कौशल विकास अब समाज की जरूरत बन गया है। केन्द्र सरकार के कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत भारतीय कृषि कौशल परिषद् के सौजन्य से वेटरनरी विश्वविद्यालय में कौशल विकास के दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। कृत्रिम गर्भाधान तकनीक और लघु कुक्कुट पालन के दीर्घ अवधि के निःशुल्क प्रशिक्षण पहली बार आयोजित किये हैं। इस प्रशिक्षण में संगठित, असंगठित क्षेत्रों में लगे किसान मजदूर और श्रमिकों को शामिल किया गया है। युवाओं में पशुपालन से सम्बद्ध उद्यमिता को विकसित करना इसका प्रमुख उद्देश्य है जिससे स्वरोजगार के अवसर सुलभ हो सकें। राजुवास द्वारा केन्द्र और राज्य सरकार की विभिन्न एजेन्सियों के मार्फत समय–समय पर कौशल अभिवृद्धि विकास के लिए निःशुल्क प्रशिक्षण की सुविधा सुलभ करवाई जाती है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा युवा लोगों को रोजगार सुलभ करवाने और आय के स्त्रोत के रूप में पशुपालन अपनाने को प्रोत्साहित करने के लिए लघु अवधि के सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम भी उपलब्ध करवाए गए हैं। एक व दो माह की अवधि के हिन्दी भाषा में तैयार पाठ्यक्रम का प्रारूप इस प्रकार तैयार किया गया है जिसमें शामिल होकर व्यक्ति स्वयं का पशु फार्म स्थापित करके या पशुपालन तकनीकों का प्रशिक्षण प्राप्त कर अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। इन सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों में कुक्कुट उत्पादन, आहार संयोजन, कृत्रिम गर्भाधान तकनीक, जैविक पशुधन उत्पादन, डेयरी फार्म प्रबंधन, पशु आहार का संयोजन, पालतु पशुओं को प्राथमिक उपचार, ब्रॉयलर उत्पादन, भेड़–बकरी उत्पादन और मूल्य संवर्द्धन व डेयरी उत्पाद जैसे विषय शामिल किये गए हैं। राजुवास किसानों, पशुपालकों और बेरोजगार युवाओं और लोगों को कौशल विकास के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए आवश्यक अतिरिक्त संसाधन और विशेषज्ञ सेवाएं सुलभ करवाने के लिए संकल्पबद्ध है। जय हिन्द!

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, मथुरा के कुलपति प्रो. के. एम. एल. पाठक एवं राजुवास के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा श्वानों में दंत रोगों के निदान पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

वेटरनरी मेडिसिन की राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

"एकल स्वास्थ्य मिशन की चुनौतियों का सामना करने के लिए और बेहतर पशु स्वास्थ्य के समग्र पशु चिकित्सकीय दृष्टिकोण" विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी और इण्डियन सोसाइटी फॉर वेटरनरी मेडिसिन का 37वां वार्षिक सम्मेलन 1–3 फरवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय में आयोजित की गई। संगोष्ठी में देश भर के 450 पशुचिकित्सक, वैज्ञानिक और विशेषज्ञ शामिल हुए। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए लालेश्वर महादेव मंदिर के अधिष्ठाता स्वामी सोमगिरी जी महाराज ने कहा कि मनुष्य जाति द्वारा उपभोगवादी प्रवृत्ति के कारण प्राकृतिक संतुलन बिगड़ गया है। अतः हमें अपने दर्शन और दृष्टि को सही रख कर संपूर्ण जीव जगत को एकल स्वस्थ्य मानते हुए कार्य करने की जरूरत है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि बदलते परिवेश में पशुचिकित्सा वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों को नई सोच और विचार के साथ कार्य करने की जरूरत है। पशुचिकित्सकों को अपने कार्य और व्यवहार में शैक्षणिक श्रेष्ठता व अनुसंधान की गुणवत्ता को बनाए रखकर आगामी 20 वर्षों की कार्य योजना को सोचकर आगे बढ़ना होगा। एकल स्वास्थ्य मिशन के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए चिकित्सा वैज्ञानिकों को सामुदायिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ मनुष्य, पशु, वनस्पति के साथ पर्यावरण में सामंजस्य रखना होगा। इण्डियन सोसाइटी फॉर वेटरनरी मेडिसिन के अध्यक्ष डॉ. डी.एस. नौरियाल ने भी सम्बोधित किया। संगोष्ठी के आयोजन सचिव प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि सम्मेलन में देश के सभी प्रांतों के वैज्ञानिकों के 600 से अधिक शोध सारांश प्राप्त हुए हैं। तीन दिवसीय संगोष्ठी के 9 तकनीकी सत्रों में 25 लीड पेपर प्रस्तुत किये। सोसाइटी के महासचिव डॉ. आर. रामप्रभु ने प्रगति–प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता और आयोजन समिति के अध्यक्ष प्रो. राकेश राव ने सभी का आभार व्यक्त किया।

श्री डूंगरगढ के तीन गांवों में पशुपालकों के आपदा प्रबंधन के प्रशिक्षण सम्पन्न

राजुवास के आपदा प्रबंधन केन्द्र द्वारा 6–9 फरवरी 2019 तक श्री डूंगरगढ़ तहसील के गांव राजपुरा, बीझांसर, गुसांईसर बड़ा व बीकानेर तहसील के गांव खारड़ा में एक–एक दिवसीय आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये। इन शिविरों में 153 पुरूष एवं महिला पशुपालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। केन्द्र के मुख्य अन्वेषक डा. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि हमारी अर्थव्यवस्था में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में पशु बेहद महत्वपूर्ण है इसलिए आपदाओ के दौरान पशुओं के बचाव पर ध्यान केन्द्रित करना आर्थिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। पशु राष्ट्र की सम्पति है और उनकी रक्षा करना हमारा महत्ती कर्तव्य है। केन्द्र के आपदा प्रबंधन विशेषज्ञ शैलेन्द्र सिह शेखावत ने आपदा से पूर्व, आपदा के दौरान एंव आपदा के पश्चात तीनों चरणो में पशुधन के बचाव के लिए अपनाये जाने वाले प्रायोगिक उपायों के बारे में विस्तृत प्रशिक्षण प्रदान किया। डॉ. सोहेल मोहम्मद ने केन्द्र के द्वारा विकसित तकनीकों से सचित्र अवगत करवाया।

कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन और लघु कुक्कुट पालन पर दीर्घ अवधि के प्रशिक्षण शुरू

केन्द्र सरकार के कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन और लघु कुक्कुट पालन प्रबंधन पर दीर्घ अवधि के दो प्रशिक्षण कार्यक्रम 15 फरवरी से वेटरनरी विश्वविद्यालय में शुरू हो गए। भारतीय कृषि कौशल परिषद के तत्वावधान में आयोजित प्रशिक्षण में राज्य के विभिन्न जिलों से आए 40 प्रशिक्षणार्थी शामिल हैं। संभागियों को सम्बोधित करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि वे पूरे मनोयोग से कृत्रिम गर्भाधान तकनीक और कुक्कुट पालन के विभिन्न पहलुओं की वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करके उसे धरातल पर क्रियान्वित करें। कार्य में दक्षता से ही आपको और समाज को इसका फायदा मिलेगा। राजुवास के कुलसचिव प्रो. हेमंत दाधीच ने भी सम्बोधित किया। राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक और प्रशिक्षण के प्रभारी प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक पर 50 दिवस और लघु कुक्कुट पालन पर 30 दिन अवधि के प्रशिक्षण आयोजित किए जा रहे हैं। प्रशिक्षण के दौरान पशुचिकित्सा विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों द्वारा उद्यमिता विकास के संपूर्ण पक्षों की जानकारी और वैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस अवसर पर अतिथियों ने "कुक्कुट पालन मार्गदर्शिका" की एक पुस्तिका का विमोचन किया।

यू.जी.सी. द्वारा राजुवास को 12–बी की मान्यता

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर को 12 बी की मान्यता प्रदान की गई है। राज्य के सभी कृषि एवं पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों की केटेगरी में यू.जी.सी. से 12 बी मान्यता प्राप्त करने वाला राजुवास पहला विश्वविद्यालय बन गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने विश्वविद्यालय को 12–बी में मान्यता को एक विशिष्ट उपलब्धि बताते हुए कहा कि इससे यूजीसी से वित्तीय सहायता और अनुदान मिल सकेंगे।

श्वानों में दंत रोगों के निदान और उपचार पर दो दिवसीय कार्यशाला संपन्न

अखिल भारतीय नेटवर्क कार्यक्रम के तहत डिमस्का परियोजना में श्वानों के दंतरोगों के निदान और उपचार पर शल्य चिकित्सा विशेषज्ञों की दो दिवसीय कार्यशाला 22–23 फरवरी को आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए पंड़ित दीनदयाल उपाध्याय पशुचिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय मथुरा के कुलपति प्रो. के.एम.एल. पाठक ने कहा कि पशुओं में शल्य चिकित्सकीय उपायों की गहन जरूरत है। राजुवास देश के पांच प्रमुख पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों में शामिल है जहां पशुओं की सी.टी. स्केन, सहित डॉयग्नोस्टिक इमेजेज की आधुनिकतम उपचार सुविधाएं उपलब्ध हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुओं के व्यापक हित में उन्नत उपकरणों से क्लिनिकल और शल्य चिकित्सा सेवाएं सुलभ

करवाई गई है। इनके माध्यम से राज्य के पशुचिकित्सकों, अन्य विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा विशेषज्ञों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ–साथ राज्य के पशुपालकों को भी इसका लाभ मिल रहा है। कार्यशाला के संयोजक और शल्य चिकित्सा प्रमुख डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि दो दिवसीय कार्यशाला में मेडिकल दंत चिकित्सक डॉ. ध्रुपद माथुर, शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. टी.के. गहलोत और राजुवास शल्य चिकित्सा फैकल्टी के विशेषज्ञों ने प्रशिक्षण दिया। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने स्वागत भाषण किया।

14वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस में राजुवास की प्रदर्शनी

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् एवं राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के तत्वावधान में 14वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस–2019 का आयोजन नई दिल्ली में 20–23 फरवरी, 2019 को किया गया। इस दिवसीय मेले में निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन के वैज्ञानिक तौर–तरीकों को मॉडल, चार्टस, पैनल्स, रंगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में राज्य की विख्यात देशी पशुधन राठी, थारपारकर, साहीवाल, कांकरेज, मालवी और गिर नस्लों के पशुओं के भव्य रंगीन मॉडल और विशेषताओं को लेकर जनमानस में गहरी रूचि और जागरूकता रही।

राजुवास स्टॉल प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार

गंगानगर सबमण्डी यार्ड, श्रीगंगानगर द्वारा 22–24 फरवरी को गंगानगर में किसान मेले का आयोजन किया गया। तीन दिवसीय मेले में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया। इस प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन के वैज्ञानिक तौर–तरीकों को प्रदर्शित किया गया।

पशुपालक मार्च माह में पशु प्रबंधन कैसे करें

प्रिय पशुपालक भाईयों, फरवरी माह खत्म होते–होते सर्दी का अहसास कम होने लगता है, और दिन के समय तापमान में बढ़ोतरी व सुबह–सांयः ठण्ड का वातावरण रहता है। इस बदलते मौसम में पशु तनाव की स्थिति महसूस करता है और कई प्रकार के संक्रमणों के प्रति संवेदनशील हो जाता है। इस मौसम में सभी पशुओं में न्यूमोनिया का खतरा बढ़ जाता है। खुर वाले पशुओं में खुरपका–मुंहपका रोग की संभावना बहुत बढ़ जाती है। ऊंट व भेड़ बकरियों में माता रोग के प्रकोप की संभावना रहती है। भेड़–बकरियों में एक्थाईमा रोग (मुंह के आसपास फुंसिंया) की प्रबल सम्भावना रहती है। उपरोक्त संक्रामक रोगों के अतिरिक्त इस बदलते मौसम में कई बार निर्जलीकरण की स्थिति भी बन जाती है और वातावरणीय तनाव से उत्पादन में भी काफी कमी देखी जाती है। इसके अतिरिक्त बकरियों में विशेषतौर पर बालों में जुंओं की समस्या भी बढ़ जाती है जिसके कारण बकरियों में रक्ताल्पता व उत्पादन में गिरावट देखी जाती है।

अतः पशुओं को इन संक्रमण व अन्य समस्याओं से बचाने के लिए पशुपालकों को निम्न बातों पर ध्यान देकर पशु प्रबंधन करना चाहिएः

1. रात के समय पशुओं को छप्पर के नीचे अथवा पशुघर में रखें।
2. दिन में पशुओं को खुले में बांधें।
3. खुरपका–मुंहपका, लंगड़ा बुखार, भेड़–माता के टीके यदि नहीं लगवायें है तो इस माह में यह टीके अवश्य लगवा लें।
4. पशुओं को निर्जलीकरण से बचाने के लिए उचित मात्रा में स्वच्छ पानी उपलब्ध करायें।
5. पशुओं को पर्याप्त मात्रा में लवण मिश्रित चारा–दाना देवें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

पशुपालन नए आयाम
फार्म–4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	:	बीकानेर (राज.)
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	प्रकाशक का नाम	:	प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर
4.	मुद्रक का नाम	:	प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
5.	संपादक का नाम	:	प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	लागू नहीं

मैं प्रो. अवधेश प्रताप सिंह एतद्वद्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 01–3–2019

(प्रो. अवधेश प्रताप सिंह)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

प्रशिक्षण समाचार

चूरू केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 6, 7, 12, 14, 15, 16, एवं 18 फरवरी को गांव पड़िहारा, सांत्यू, रंगाईसर, डब्लूसर, देपालसर, ढ़ाणी स्वामीयान, एवं बलाल गांवों में तथा दिनांक 23 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 128 महिला पशुपालकों सहित कुल 250 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 2, 8, 13, 14 एवं 20 फरवरी को गांव चुनावढ़, 6 एम. सी.उदयपुरा गोदारान, सुखचैनपुरा, 7 एएस एवं मदेरा गांवो में तथा 5 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 35 महिला पशुपालकों सहित कुल 191 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 8, 11, 13, 18, 19, 21 एवं 22 फरवरी को ग्राम रोहुआ, सुलिवा, फतेहपुरा, सेउडा, वागदरी, नवावास खालसा एवं सवली गांवो में एवं 25 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 223 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 11, 12, 13, 14, 15, 18 एवं 19 फरवरी को गांव भावतां, जूसरी, हनुमानपुरा, बेरडा, त्रिमिग्या, पलारा एवं बरवाली गांवों में तथा 23 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 47 महिला पशुपालकों सहित 223 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 16 एवं 22 फरवरी को गांव साफणदा एवं सरवाड़ गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 55 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 5, 11, 14, 18, 21 एवं 23 फरवरी को गांव रूपोत फलां, हमात फलां, सामीतेड़, डेटकों कावेला, डूंगर फलां एवं हरियात गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 217 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 1, 2, 5, 6, 11, 12, 18, 19 एवं 23 फरवरी को गांव नगला बद्रीपुर, जटवास, नगला मैथंना, ईशापुर, कुरबारा, चक चौबा, भैंसा, होंता एवं बाई गांवों में तथा दिनांक 22 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 12 महिला पशुपालकों सहित कुल 166 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 11, 14, 15, 16, 19, 20, 22 एवं 23 फरवरी को गांव हरभगतपुरा, कलमण्डा, अरनियामाल, निमोला, कडिला, झिराना, मीरनगर एवं देवीखेड़ा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 236 पशुपालकों एंव कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 4, 14, 15, 16, 20 एवं 23 फरवरी को गांव गोविन्दसर, धीरधान, ढाणी पाण्डूसर, अमरपुरा, किशनासर एवं हंसेरा गांवो में तथा दिनांक 21 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 219 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कोटा केन्द्र द्वारा 276 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 8, 12, 14, 16, 19, 20, 21, 22 एवं 25 फरवरी को गांव रामरी, पालाहेड़ा, खेडली गुडला, बमोली, नियाना, डेगानिया, डोबरली, खण्डगावं एवं रंगपुर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 276 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा केन्द्र द्वारा 249 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) 4, 6, 8, 9, 15, 16 एवं 18 फरवरी को गांव सावा, रघुनाथपुरा, हजुरपुरा, भावलिया, सतखण्डा, सुरजना एवं सेमलपुरा गांवो में तथा दिनांक 5, 12 एवं 19 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 249 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 14, 15, 19, 20, 22, 23 एवं 25 फरवरी को गांव जनपुरा, मर्होली, लहकपुर, कोयला, कंकोली, मढ़ा एवं जपावली गांवों में तथा 18, एवं 21 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 311 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

जोधपुर केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 14, 16, 18, 19, 23 एवं 25 फरवरी को गांव बोरानाडा, डोली, नारनाडी गांव, डेलूम्बा, बुझावड एवं झंवर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 32 महिला पशुपालकों सहित कुल 172 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी व प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 12 एवं 19 फरवरी को गांव चाईया एवं रामगढ़ में तथा 24 फरवरी को कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में एक दिवसीय कृषक–पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस शिविर में 186 कृषक–पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुओं में विषैले चारे खा लेने से उत्पन्न विषाक्तताएं-बचाव एवं उपचार

पशु अपने भोजन हेतु पौधों पर निर्भर रहते हैं। हरा चारा पशु आहार का महत्वपूर्ण घटक हैं। स्टॉल फीडिंग में पशुपालक, पशुओं को सावधानीपूर्वक चुनकर हरा चारा खिलाता है, परन्तु दुर्घटनावश कभी–कभी दूषित, सड़े गले या विषाक्त पौधों का प्रयोग हो सकता है। इसी प्रकार चारागाह में चरते वक्त पशु भी विषाक्त पौधों को खा सकता है, जिससे विषाक्तता उत्पन्न हो जाती है। चारा उगाने के बाद कभी–कभी बारिश नहीं होने से चारा मुरझा जाता है, इस मुरझाये हुए चारे को पशुओं को खिलाने से भी पादप विषाक्तता उत्पन्न हो सकती है। सामान्यतया पशुओं में विषैला चारा खा लेने से निम्न प्रकार की विषाक्तता उत्पन्न हो सकती है :–

सायनाइड विषाक्तता

सायनाइड विषाक्तता सायनोजेनिक पौधे खाने से होती है। सायनोजेनिक पौधे वे होते हैं जिनमें सायनोजेनिक ग्लाकोसाइड्स पाए जाते हैं। पशुओं द्वारा इनको ग्रहण कर लेने पर इनमें उपस्थित मुक्त हाइड्रोक्लोरिक अम्ल के कारण ये विषाक्तता उत्पन्न होती है। पौधों में उपस्थित बंधित हाइड्रोक्लोरिक अम्ल, एंजाइम क्रिया के कारण मुक्त हाइड्रोक्लोरिक अम्ल में परिवर्तित हो जाती है। इन पौधों के कारण विषाक्तता सामान्यतया खुले घूमने वाले पशुओं में अधिक होती है। मुख्य रूप से पाए जाने वाले सायनोजेनिक पौधे बबूल, ज्वार, कनेर, सफेदा, गन्ने की पत्तिया, मक्का एवं मूंग इत्यादि है, पशु के शरीर में हाइड्रोक्लोरिक अम्ल से पृथक होकर सायनाइड आयन, साइटोक्रोम ऑक्सीडेज के आयरन आयन से क्रिया करता है। जिससे ऑक्सीजन का उपयोग रूक जाता है, इसके फलस्वरूप उपचार नहीं होने से पशु की मौत हो जाती है।

विषाक्तता के लक्षण– सायनाइड युक्तचारा खाने से पशु बैचेन होने लगता है। मुंह से लार गिरने लगती है। श्वांस लेने में कठिनाई होती है तो पशु मुंह खोलकर श्वांस लेने लगता है। पशु के मुंह से कड़वे बादाम की गंध आती है। सायनाइड विषाक्तता के कारण ऑक्सीजन शरीर में नहीं पहुंच पाती और दम घुटने से पशु की मृत्यु हो जाती है।

विषाक्तता का उपचार– सायनाइड विषाक्तता का पता लगते ही पशु को 3 ग्राम सोडियम नाइट्रेट एवं 15 सोडियम थायो सल्फेट 200 मिली. डिस्टिल पानी में घोलकर नस में लगाना चाहिए। पशु को पानी नहीं पिलाना चाहिए।

विषाक्तता से बचाव– छोटे, पीले पत्तियों वाले, सूखे ऐंठे हुए या मुरझाये हुए पौधों को चारे के रूप में नहीं खिलाना चाहिए। कम बढ़वार वाली ज्वार, बाजरा की चरी नहीं खिलानी चाहिए। अच्छी सिंचाई या बारिश के बाद ही फसल पशुओं को खिलानी अच्छी रहती है।

नाइट्रेट विषाक्तता

उच्च नाइट्रेट युक्त चारे को खिलाने से पशुओं में नाइट्रेट विषाक्तता की संभावना बनी रहती है। प्रायः चारे में नाइट्रेट की अधिक मात्रा नहीं पायी जाती परन्तु, अगर फसल में नाइट्रेट युक्त खाद अधिक मात्रा में दे दी जाये, तो चारा फसलों जैसे मक्का, जई, चरी, सूडान घास इत्यादि में नाइट्रेट की मात्रा बढ़ जाती है। किसी पौधे में पानी की कमी से वृद्धि रूक जाने पर भी उसमें नाइट्रेट की मात्रा बढ़ जाती है। इन पौधों के अधिक सेवन से नाइट्रेट, नाइट्राइट में बदल जाता है, और रक्त में हीमोग्लोबिन को 'मेट हीमोग्लोबिन' में बदल देता है। इसके कारण कोशिकाओं तक ऑक्सीजन नहीं पहुंच पाती है।

विषाक्तता के लक्षण– पशु श्वांस और नाड़ी दर बढ़ जाती है। श्वास लेने में कठिनाई और मांसपेशियों में ऐंठन आ जाती है। ऑक्सीजन की कमी से आंख, नाक और मुंह की श्लेष्मा झिल्ली का रंग गहरा हो जाता है। अधिक विषक्तता हो जाने पर रक्त का रंग चॉकलेटी–भूरा हो जाता है, एवं पशु की मृत्यु हो जाती है।

विषाक्तता का उपचार– नाइट्रेट विषाक्तता का पता चलते ही मिथाइलिन ब्लू का 1 प्रतिशत घोल लगभग 80 से 100 मिली, सीधा नस में चढ़ा देना चाहिए। इसके साथ ही एस्कोर्बिक अम्ल 3 मिली. प्रति किलोग्राम शरीर भार के अनुसार देना चाहिए।

विषाक्तता से बचाव– अधिक नाइट्रोजन युक्त भूमि में उगे चारे की अधिक मात्रा को एक साथ नहीं दिया जाना चाहिए। छोटे एवं कम वृद्धि वाले, सूखे एवं पीली पत्तियों वाले तथा मुरझाये चारे को पशु को कभी नहीं देना चाहिए।

ऑक्सलेट विषाक्तता

ऑक्सलेट युक्त पौधों को अधिक मात्रा खा लेने पर पशु में ऑक्सलेट विषाक्तता के लक्षण प्रकट होते हैं। सामान्यतया अमरेन्थस, चिनोपोडियम, ब्रेसिका प्रजाति इत्यादि के पौधों को पशु कम मात्रा में खाते रहते है, परन्तु इनकी मात्रा अधिक हो जाने पर विषाक्तता उत्पन्न हो जाती है। पौधों में उपस्थित ऑक्सलेट पशु के शरीर में उपस्थित कैल्शियम के साथ जुड़कर अघुलनशील लवण बना लेते हैं। तथा ये लवण शरीर के अन्य भागों में पहुंचकर क्रिस्टल बना देते हैं।

विषाक्तता के लक्षण– ऑक्सलेट विषाक्तता से पशु सुस्त रहने लगता है, भूख कम लगती है। लार का स्त्रावण बढ़ जाता है, श्वसन दर अनियमित हो जाती है और पशु कोमा में भी जा सकता है।

विषाक्तता का उपचार– पशुओं को कैल्शियम देना चाहिए जिससे ऑक्सलेट उसके साथ कैल्श्यिम ऑक्सलेट के रूप में बाहर निकल जाये। इसके लिए डाई कैल्सियम फॉस्फेट दिया जा सकता है। लक्षणात्मक उपचार किया जाना चाहिए।

विषाक्तता से बचाव– ऑक्सलेट पौधों के अधिक सेवन से पशुओं को बचाना चाहिए एवं चारे की मात्रा बढ़ाने के लिए ऑक्सलेट पौधों के साथ दूसरा चारा मिक्स करके खिलाना चाहिए। पशु आहार में कैल्शियम की मात्रा भी बढ़ाई जा सकती है।

डॉ. राजेश नेहरा, सहायक आचार्य
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर (मो.9461504858)

''जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट'' एक पर्यावरणीय संकट

आज अपशिष्ट किसी भी रूप में हो वह दुनिया के लिये एक बहुत बड़ा पर्यावरणीय संकट बनता जा रहा है। हम जानते हैं कि हर शहर में कई निजी व सरकारी अस्पताल होते हैं जिनसे प्रतिदिन सैंकड़ों टन जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निकलत है, जिनमें बीमार व्यक्तियों के इलाज में प्रयुक्त होने वाले सामान भी शामिल हैं जिन्हें इस्तेमाल करके अपशिष्ट में फैंक दिया जाता है। यह एक जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट का रूप ले लेता है जो कि हमारे एवं पशुओं के स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिये बहुत हानिकारक है। इससे न केवल बीमारियां फैलती हैं बल्कि जल, थल और वायु सभी दूषित होते हैं। चिकित्सा जीवित प्राणियों और उनके स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। चिकित्सकीय गतिविधियों से उत्पन्न अपशिष्ट जिसमें उच्च रोग संचरण की क्षमता होती है वे पशुओं एवं मनुष्यों के स्वास्थ्य के लिए विषाक्त और घातक हो सकते हैं। इन विषाक्त अपशिष्ट में संक्रामक, जैव चिकित्सकीय और रेडियो–सक्रिय सामग्री एवं नुकीले चिकित्सकीय औजार जैसे सुई, चाकू, नश्तर और शरीर के अंग, रूई, गॉज, पट्टियां खून व मूत्र के नमूने आदि शामिल हैं। अस्पताल के कुल अवशेष का लगभग 20 प्रतिशत जैविकीय भाग होता है संक्रमित होता है। यदि इसका उचित तरीके से प्रबंधन और उपचार न किया जाए तो अस्पताल का 100 प्रतिशत अपशिष्ट संक्रमित हो जाएगा तथा इसको नगर पालिका एवं घरेलू अपशिष्ट के साथ मिलाने से कचरा बीनने वाले बच्चों के हाथ में सिरिन्ज में लगी सुई, नुकीले चिकित्सीय औजार तथा टूटी हुए कांच के टुकड़ों आदि से चोट लग जाती है तथा जिससे संक्रमण का खतरा रहता है। यह मानव व पशुओं के लिए खतरनाक, विषाक्त होता है। संक्रमित अपशिष्ट अन्य स्वस्थ मानव व पशुओं में संक्रमण फैलाएगा, साथ ही ऐसे प्रमाण भी सामने आए है कि इससे कई भयावह बीमारियां जैसे कैंसर, एड्स, हेपेटाइट्स बी, ब्रूसेलोसिस, एन्थ्रेक्स होने का खतरा भी होता है।

क्या होता है जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट : जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट या ''बॉयो मेडिकल अपशिष्ट'' का अर्थ है किसी भी ठोस और या तरल अपशिष्ट, नुकीले और बिना धार वाले शरीर के अंगों, शरीर के तरल पदार्थ ''रसायन'', फार्मास्यूटिकल्स, चिकित्सा उपकरणों और रेडियोधर्मी सामग्री सहित इसके कंटेनर और मध्यवर्ती उत्पाद जो निदान, उपचार या वहां करने के लिए या उत्पादन में से संबंधित या परीक्षण के तत्संबंधी अनुसंधान में या मनुष्य या पशुओं के टीकाकरण के दौरान उत्पन्न होता है।

अस्पतालों व अन्य संस्थाओं से निकलने वाले इस अपशिष्ट को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के अनुसार निम्न वर्गों में बांटा गया है :

औषधीय पदार्थः इसमें अवशेष रही पुरानी व खराब दवाएं आती हैं।

रोगयुक्त पदार्थः इसमें रोगी का मल–मूत्र, उल्टी, मानव अंग आते हैं।

रेडियोधर्मी पदार्थः इसमें विभिन्न रेडियोधर्मी पदार्थ जैसे कि रेडियम, एक्स–रे तथा कोबाल्ट आदि आते हैं।

रासायनिक पदार्थ : इसमें बैटरी व लैब में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न रासायनिक पदार्थ आते हैं।

जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के स्रोत क्या हैं ?

जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के मुख्य स्रोत सरकारी और निजी अस्पताल, नर्सिंग होम, डिस्पेंसरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा पशु स्वास्थ्य केन्द्र होते हैं। इनके अलावा विभिन्न मेडिकल कॉलेज, रिसर्च सेंटर, पराचिकित्सक सेवाएं, ब्लड बैंक, मुर्दाघर, शव–परीक्षा केन्द्र, पशु चिकित्सा कॉलेज, पशु रिसर्च सेंटर, स्वास्थ्य संबंधी उत्पादन केन्द्र तथा विभिन्न जैव चिकित्सकीय शैक्षिक संस्थान भी बड़ी मात्रा में जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट पैदा करते हैं। इनके अलावा सामान्य चिकित्सक, दंत चिकित्सा क्लिनिकों, पशु घरों, बूचड़खाने, रक्तदान शिविरों, एक्यूपंक्चर विशेषज्ञों, मनोरोग क्लिनिकों, अंत्येष्टि सेवाओं, टीकाकरण केन्द्रों तथा विकलांगता शैक्षिक संस्थानों से भी थोड़ा–बहुत जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निकलता है।

जैव चिकित्सकीय निपटान के नियम क्या हैं ?

जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट का सही ढंग से निपटान करने के लिये कानून बने हैं लेकिन उनका पालन ठीक से नहीं होता है। इसके लिये केन्द्र सरकार ने पर्यावरण संरक्षण के लिये जैव चिकित्सकीय वेस्ट (प्रबंधन व संचालन) नियम– 2016 बनाया है। जैव चिकित्सकीय वेस्ट अधिनियम–2016 के अनुसार निजी व सरकारी अस्पतालों को इस तरह के चिकित्सकीय जैविक अपशिष्ट को खुले में या सड़कों पर नहीं फैंकना चाहिए। इस अपशिष्ट को म्यूनीसिपल अपशिष्ट में मिलाना चाहिए। साथ ही स्थानीय कूड़ाघरों में भी नहीं डालना चाहिए क्योंकि इस अपशिष्ट में फैंकी जानी वाली सेलाइन बोतलें और सिरिंज कबाड़ियों के हाथों से होती हुई अवैध पैकिंग का काम करने वाले लोगों तक पहुंच जाती है जहां इन्हें साफ कर नई पैंकिंग में बाजार में बेच दिया जाता है। जैव चिकित्सकीय वेस्ट नियम के अनुसार इस जैविक अपशिष्ट को खुले में डालने पर अस्पतालों के खिलाफ जुर्माने व सजा का भी प्रावधान है। कूड़ा निस्तारण के उपाय नहीं करने पर पांच साल की सजा और एक लाख रूपये जुर्माने का प्रावधान है। इसके बाद भी यदि जरूरी उपाय नहीं किए जाते हैं तो प्रति दिन पांच हजार का जुर्माना वसूलने का भी प्रावधान है। नियम कानून तो है लेकिन जरूरत है इसको कड़ाई से लागू करने की। भारत सरकार के द्वारा संक्रमित अपशिष्ट के उपचार व निस्तारण के लिए बनाए गए नियम निम्न हैं :

1. संक्रमित व गैर संक्रमित अपशिष्ट को मिश्रित ना करें।
2. जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट को उसके भंडारण, परिवहन, उपचार और निपटान से पहले सृजन के स्थान पर विभिन्न रंग के थैलों में निम्न प्रकार से पृथक किया जाए :–
   1. **पीला थैला** – मानव एवं पशु शारीरिक अपशिष्ट, ठोस अपशिष्ट मिट्टी से सने हुए अपशिष्ट, प्लास्टर कास्ट, रक्त की थैलियां एवं जलाए जाने वाले संक्रमित अपशिष्ट इत्यादि।
   2. **लाल थैला** – इस बॉक्स एवं डस्टबिन में प्लास्टिक व रबड़ का अपशिष्ट डालना चाहिए। सभी प्लास्टिक की बोतलों को काटकर डालना अनिवार्य हैं। इनमें नाक व पेट की नली, कैथिटर, मूत्र नली व बैग, सक्शन नली, शरीर से तरल निकालने में प्रयुक्त नली, आईवी सैट, ब्लड सैट व ग्लूकोज बोतल शामिल हैं।
   3. **सफेद थैला** – धातुओं सहित नोकदार अपशिष्ट
   4. **नीला थैला** – इसमें तेजधार ब्लेड, सर्जिकल ब्लेड, कांच, सूईयां आदि को एयर प्रूफ बोतल में डालकर निष्पादित किया जाना जरूरी है।
3. जैव चिकित्सीय अपशिष्ट को संग्रह करने वाले बैग सील युक्त होने चाहिए।
4. जैव चिकित्सीय अपशिष्ट का भंडारण आवासीय बस्तियों से दूर किया जाना चाहिए।

जैव चिकित्सीय अपशिष्ट को संग्रहण व निस्तारण करने वाले निर्धारित समूह को प्रशिक्षित करने के लिए राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में पशु जैव चिकित्सीय निस्तारण तकनीकी केन्द्र स्थापित किया गया है। केन्द्र के द्वारा समय समय पर निर्धारित समूह को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण करवाए जा रहे हैं तथा सरल भाषा में पत्रक व पोस्टर भी प्रकाशित किए गए हैं जो कि लोगों को जागरूक करने में सहायक है। जैव चिकित्सीय अपशिष्ट के प्रबंधन व निस्तारण विषय पर दो लघु फिल्में भी बनाई गयी है।

डॉ. रजनी जोशी
(वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर मो. : 9414253108)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मार्च, 2019

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
खुरपका–मुँहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	बाड़मेर, चूरू, दौसा, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, नागौर, अजमेर , कोटा, सवाईमाधोपुर, जैसलमेर
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	बीकानेर, सीकर, कोटा, उदयपुर, नागौर, जोधपुर, हनुमानगढ़ , श्रीगंगानगर, जैसलमेर, सिरोही, पाली, टोंक
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, सीकर, अलवर, भीलवाड़ा, कोटा, बारां, टोंक, जोधपुर, जैसलमेर, हनुमानगढ़, झुंझुनूं, पाली, सिरोही
सर्रा (तिबरसा)	गाय, भैंस, ऊंट	धौलपुर, भरतपुर, सीकर, हनुमानगढ़
हेमरेजिक सेप्टीसिमिया (गलघोंटू)	गाय, भैंस	दौसा, अजमेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जयपुर, सीकर हनुमानगढ़, अलवर, चित्तौडगढ़, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, धौलपुर
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा
एन्जूटिक अबोर्शन	भेड़	बीकानेर, नागौर, हनुमानगढ़
माता रोग (चेचक)	भेड, बकरी, ऊँट	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, सिरोही, पाली, जोधपुर, चूरू
लँगड़ा बुखार (Black Quarter)	गाय	चित्तौड़गढ़, बीकानेर, हनुमानगढ़, नागौर, जयपुर
ऐनाप्लाज्मोसिस	भैंस	भरतपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
बोटूलिज्म	गाय	बाड़मेर, जोधपुर, जैसलमेर, पाली, सिरोही, बीकानेर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शियस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
अन्तः परजीवी (एम्फीस्टोमियेसिस,फेसियोलियेसिस)	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	भरतपुर, धौलपुर, अलवर, कोटा, डूंगरपुर, उदयपुर, बांसवाडा, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, सीकर, बूंदी

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

धारणीयां जैविक पशुपालन से अधिकतम मुनाफा कमाते हैं

श्रीगंगानगर जिले के गांव मदेरा के चक–7 डीबीडी के रहने वाले पुनीत ने उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद कृषि व पशुपालन में रोजगार तलाश लिया। किसान परिवार से जुड़े होने के साथ खेती–बाड़ी में शुरू से रूझान था। जलवायु की अनियमितता के कारण जैविक खेती से अपनी आय बढ़ाने के लिए पशुपालन को बढ़ावा दिया। कृषि के साथ पशुपालन में विविधता एवं नवीन तकनीकी की जानकारी एवं प्रशिक्षण पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ के सहयोग प्राप्त करके वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन प्रारम्भ किया। धारणियां ने प्रशिक्षण व तकनीकी सलाह लेकर अपनी खेती को आधुनिक रूप देने के लिए पशुपालन के साथ कृषि में जैविक बागवानी, सब्जी उत्पादन शुरू किया। पशुपालन को अहम मानते हुए पशुओं से उत्पादित गोबर व मूत्र से वर्मीकम्पोस्ट तैयार करना, पशुओं के जैविक दुग्ध उत्पादन हेतु अजोला उत्पादन कर पशुओं को खिलाना तथा तैयार वर्मीकम्पोस्ट को खेती में डाल कर जैविक हरा चारा व दाने वाली फसल तैयार की। स्वंय के घर पर फीड व चारा सूखा कर तैयार कर पशुओं को खिलाना शुरू किया। इसके साथ पशुओं में टीकाकरण का ध्यान रखा। अपने घर पर आहार प्रबन्धन करके सन्तुलित आहार, अनाज, दलहन, तिलहन, नमक, गुड़ व मिनरल मिक्चर की सन्तुलित मात्रा रखी। आज उनके पास देशी गौवंश की 2 सहीवाल गाय व एक अन्य नस्ल सहित कुल 6 छोटे–बड़े पशु हैं। पशुपालन में नवीनतम तकनीक के अन्तर्गत हरे चारे की अजोला इकाई स्थापित की और पशुओं के आहार के लिए पौष्टिक प्रोटीन युक्त हरा चारा प्राप्त किया। इस जैविक उत्पादन के साथ ही पशुओं की सेहत भी अच्छी रहने लगी। पशु चिकित्सक की सलाह पर समय पर डिवर्मिंग, मिनरल मिक्चर, टीकाकरण, कृत्रिम गर्भाधान अच्छे तरीके से करवाते हैं इससे उन्हें प्रतिदिन 30 किलो दुग्ध उत्पादन होता है। दुग्ध का घर में उपयोग के बाद शेष से शुद्ध घी भी तैयार करते हैं और जैविक दुग्ध का वितरण करते हैं। साथ–साथ गोबर से बॉयो गैस तैयार कर रसोई में ईंधन की बचत भी कर रहे हैं। जैविक फसल गेहूं, चना, फल के साथ पशुपालन और मछली पालन भी कर रहे हैं वे पशुपालन को किसान की रीढ़ की हड्डी मानते हुए इससे अच्छा उत्पादन करके मुनाफा कमाने का श्रेय पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र सूरतगढ़ को देते हैं। सम्पर्क : **पुनीत धारणीयां** (मो. नं. 988707801)

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

स्वदेशी गौवंश का पालन हमारे व्यापक हित में है

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों !

राजस्थान दुग्ध उत्पादन में देश में दूसरे स्थान पर है। राज्य में कम वर्षा, अकाल की स्थिति और विपरीत जलवायु परिस्थितियों के बावजूद भी स्वदेशी गौवंश हमेशा कसौटी पर खरा उतरा है। यह ग्रामीण जन–जीवन और किसानों को सदैव सम्बल प्रदान करने वाला है। देश और राज्य में वर्णित स्वदेशी गौवंश में अनुकूलन की अद्भुत क्षमता है जो संकर पशुओं की अपेक्षा काफी अधिक है। स्वदेशी गौपालन में संकर पशु की अपेक्षा कम मेहनत, लागत और संसाधनों की जरूरत रहती है अतः ये हमारे लिए अधिक फायदा देने वाली है। राजस्थान की श्रेष्ठ गौवंश नस्लों में साहीवाल, थारपारकर, राठी, गिर, कांकरेज व मालवी है। ये राष्ट्रीय आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो से मान्य है। राजुवास में किसान पशुपालकों के हित में इन सभी देशी गौवंश के प्रजनन, संवर्द्धन और संरक्षण के वैज्ञानिक अनुसंधान का कार्य किया जा रहा है। देशी गौवंश के संरक्षण से भविष्य की बड़ी समस्याओं का हल इसके उत्पादों से मिल सकता है। यूरोप और अमेरिका जैसे समृद्ध देशों की अर्थव्यवस्था में भी गौवंश का विशिष्ट महत्व है। हमारे देशी गौवंश की दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ाने, नस्लों का सुधार और गौवय और गौमूत्र के समुचित उपयोग के लिए गौ संवर्द्धन के सबल प्रयासों की जरूरत है। उत्कृष्ट देशी नस्लों से अन्य पिछड़ी नस्लों का विकास भी किया जा सकता है। राजुवास में पारंपरिक पशुचिकित्सा एवं वैकल्पिक चिकित्सा अध्ययन केन्द्र द्वारा गौमूत्र के विभिन्न स्वरूपों के मानकीकरण की दिशा में कार्य किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत इसके आयुर्वेद संगत के विभिन्न प्रकार के आसव एवं अर्क बनाए गए हैं उनका विश्लेषण एवं तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है। इन उत्पादों के प्रायोगिक और क्लिनिकल परीक्षण भी किये जायेंगे। स्वदेशी गौवंश का पालन हमारे व्यापक हित में है।

–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **मार्च 2019** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। पशुपालक भाई उक्त दिवसों को मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर लाभ उठाएं।

वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
प्रो. हेमन्त दाधिच **9351687945** वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	ऊंटों में होने वाले प्रमुख रोग व निदान	07.03.2019
प्रो. एस.सी. गोस्वामी **9414604655** अधिष्ठाता, छात्र कल्याण, राजुवास, बीकानेर	मौसम परिवर्तन के समय पशुओं का बचाव कैसे करें	21.03.2019

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224